नूह आ महाप्रलय

पबितर बाइबिल, परमेश्वर की वचन में से
ई कहानी लीहल गइल बा

उत्पति ६-१०

"तोहरी बातन की खुलला से उजियार होला"
भजन संहिता 119:130

लेखक Edward Hughes
ब्याख्याकर Byron Unger; Lazarus

अनुवादक सुरेश मसीह
अनुकूलित M. Maillot; Tammy S.

कहानी 3 से 60

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्रः आप ए कहानीन क छाया प्रति मुद्रण करा सकीं ला बशर्ते की आप ओके बेचब ना।

ईश्वर जानेलन कि हमनी के बुरा करम कइले बानी जा
जेकरा के उ पाप कहेलन । पाप के दण्ड मौत ह।

ईश्वर हमनी के एतना प्यार करेलन कि उ आपना एक मात्र बेटा
यीशु के धरती पर भेजलन कि उ क्रूस पर मर जास आ हमनी के
पाप के दण्ड अपने चुकावसु । यीशु जीगइलन आ परलोक
गइलन । अब ईश्वर हमनी के पाप क्षमा कर सकेलन ।

यदि रउआ भी अपना पाप से दूर होखल चाहतानी ईश्वर से इ
बात कही : हे प्रियवर यीशु हम विश्वास करीना कि यीशु हमनी
खातीर मर गइलन आ अब जीवित बाडन । मेहरबानी करके रउअ
। हमरा जीवन मे आ जाईं अउर हमरा पाप के क्षमा दीही ताकि
हमरा के नया जीवन मिल सको । अउर हम हमेशा रउरा संगे रह
सकी । हमरा के रउआ मदद करी कि हम राउर बच्चा के तरह
रउरा खातीर जी सकी आमीन ।

हमनी के बाइबिल पढीजा आ रोज दिन ईश्वर से बात करीजा !

सुरेश मसीह Bhojpuri

ईश्वर नूह के चेतावनी दिहलन कि महाप्रलय आई आ पूरा पृथ्वी के ढक दीही । "लकडी के नाव बनाव, एतना बड नाव कि तोहार पूरा परिवार आ ढेर सारा जीव-जन्तु ओह मे समा सके ।"
3

नूह के आदेा मिलल । ईश्वर नूह के उचित निर्देश दिहलन । नूह अपना काम में व्यस्त हो गईलन !
4

लोग नूह के मजाक उडावत रहलन, नूह उ लोगन के बतलावत रहलन की उ कांहे खातीर जहाज बना रहल बाडन । नूह अपना काम में व्यस्त रहलन । उ लोगन के ई वर के बारे मे भी बतलावत रहलन बाकि केहूँ उनकर बात ना सुनल ।
5

नूह बडा विश्वासी रहलन । पहिले कभी भी बारिश ना पडल रहे फिर भी नूह ईश्वर पर विश्वास कईलन । तुरन्त जहाज सर-समान रखे खातिर तैयार रहे ।
6

अब सबसे पहिले जानवर, ईश्वर सात प्रजाति आ दूगो दूसर प्रजाति के नाव में ले जाये के कहलन । छोट बड पक्षी, छोट से छोट आ बड से बड चौपाया, सब नाव मे चढे खातिर नाव के तरफ जाये लगले ।
7

जब नूह जानवरन के नाव में चढावत रहलन, शायद, लोग नूह के भला-बुरा बोलत रहलन । बाकि उ लोग ईश्वर के खिलाफ पाप कईल ना छोडलन । नाव मे घुसे खातिर भी ना पूछलन ।
8

अन्त मे, सब जानवर आ चिडिया नाव मे चढ गईले ।
"नाव में तुहु बा जा" ईश्वर नूह के बोलवलन "तु आ तोहार पूरा परिवार भी।" नूह, उनकर पत्नि, उनकर तीनो बेटा आ उनकन लोग के पत्नि नाव मे चढ गईली जा । तब ईश्वर नाव क दरवाजा बन्द कर दिहलन ।
9

तब बारिश शुरु भइल । चालीस दिन आ चालीस रात के भारी बारिश पूरा धरती के ढक दिहलस ।
10

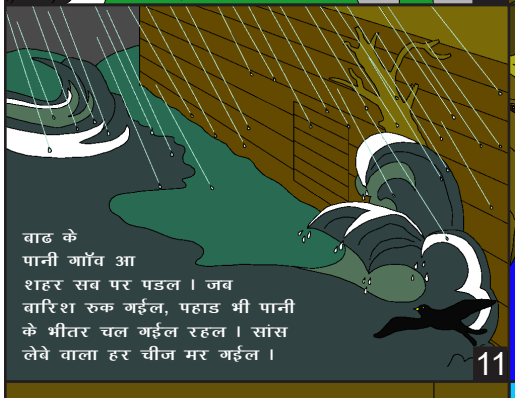
बाढ के पानी गाँव आ शहर सब पर पडल । जब बारिश रुक गईल, पहाड भी पानी के भीतर चल गईल रहल । सांस लेबे वाला हर चीज मर गईल ।
11

जैसे जैसे बाढ के पानी बढल, नाव ओकरा उपर तैरे लागल । शायद अन्दर बहुत अन्धकार रहलहोइ, शायद उबड खाबड आ ना त डरावना रहल होई । चाहे जईान भी होखे उ जहाज नोवा के बाढ के समय शरण दिहलस ।
12

बाढ के पाँच महिना के बाद, ईश्वर, पानी सुखावे वाला हवा भेजलन । धीरे - धीरे उ जहाज अरात नामके पहाड पर आ के लाग गईल । जब पानी घटत रहे, नूह जहाज मे अउर चालीस दिन रहलन ।
13

नूह जहाज के दरवाजा से एगो कौवा आ एगो कबुतर बाहर भेजलन । जब ओह लो के सुखल आ साफ आराम करे के ना मिलल, कबुतर नूह के पास वापस आ गईल । एक सप्ताह के बाद नूह एकबार फिर प्रयास कईलन ।
14

कबुतर अपना चोंच मे जैतून के पत्ता लेके वापस आ गईल । अगला सप्ताह नूह जान गईलन कि पृथ्वी सुख गईल बा काहे कि कबुतर वापस ना आइल ।
15

इश्वर नूह से कहलन कि इहे समय बा कि तु नाव मे से उतर । नूह आ उनकर परिवार मिल के सब जानवर के नाव से बाहर निकललन ।
16

नूह केतना एहसानमंद भईल होइहनं ! उ एगो बेदी बनवलन आ ईयवर के पूजा कईलन काहे कि ईश्वर उनका के आ उनका पूरा परिवार के एह डरावना बाढ के बचवलन ।
17

ईश्वर नूह से एगो अद्भूत वादा कइलन । इंसान के नाश करे खातिर उ कबो दूबारा बाढ ना भेजिहन ।
18